# पाठ 4.1 : सुरुज टघलत हे . . .

पवन दीवान

C62X2J

*संत–कवि **पवन दीवान** का जन्म 01 जनवरी 1945 को ग्राम किरवई (राजिम) जिला गरियाबंद में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा बासिन, राजिम एवं फिंगेश्वर में हुई। उन्होंने हिंदी, संस्कृत एवं अंग्रेजी में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की है। श्री दीवान प्रख्यात वक्ता और सहृदय साहित्यकार के रूप में जाने जाते हैं। उनकी प्रमुख रचनाएँ **अंबर का आशीष, मेरा हर स्वर इसका पूजन, फूल, छत्तीसगढ़ महतारी, मर–मर कर जीता है मेरा देश, मेरे देश की माटी, याद आते हैं गाँधी** आदि हैं।*

टघल–टघल के सुरुज
झरत हे धरती ऊपर
डबकत गिरे पसीना
माथा छिपिर–छापर।

झाँझ चलत हे चारो कोती
तिपगे कान, झँवागे चेथी
सुलगत हे आँखी म आगी
पाँव परत हे ऐती–तेती।

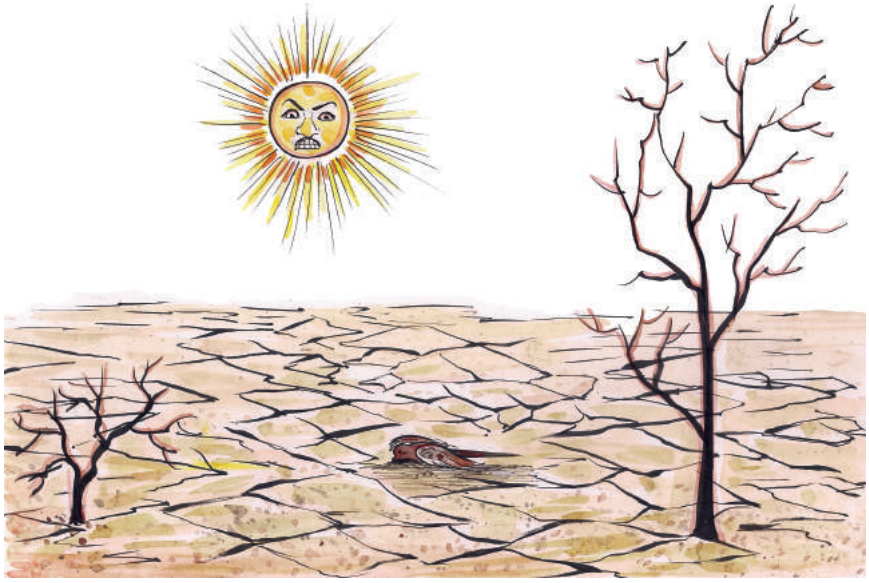

भरे पलपला, जरे भोंभरा
फोरा परगे गोड़ म
फिनगेसर ले रेंगत–रेंगत
पानी मिलिस पोंड़ म।

नदिया पातर–पातर होगे
तरिया रोज अँटावत हे
खँड म रुखवा खड़े उमर के
टँगिया ताल कटावत हे।

चट–चट जरथे अँगना बैरी
तावा बनगे छानी
टप–टप टपके कारी पसीना
नोहर होगे पानी।

साँय–साँय सोखत हे पानी
अड़बड़ मुँह चोपियावै
कुँवर ओठ म पपड़ी परगे
सिट्ठा–सिट्ठा खावै।

चारो कोती फूँके आगी
तन म बरगे भुर्रा
खड़े मँझनिया बैरी लागे
सबके छाँड़िस धुर्रा।

डामर लक–लक ले तीपे हे
लस–लस लस–लस बइठत हे
नस–नस बिजली तार बने हे
अँगरी–अँगरी अँइठत हे।

लकर–लकर मैं कइसे रेंगव
धकर–धकर जी लागे
हँकर–हँकर के पथरा फोरँव
हरहर के दिन आगे।

लहर–तहर सबके परान हे
केती साँस उड़ाही
बुड़बे जब मन के दहरा म
तलफत जीव जुड़ाही।

## शब्दार्थ

**डबकत** – उबलता हुआ; **झँवागे** – झुलस गया; **नोहर** – दुर्लभ; **अँइठत** – ऐंठता हुआ, अकड़ता हुआ; **दहरा** – गहरा भाग; **तलफत** – तड़पता हुआ; **अँटावत** – सूखता हुआ; **चोपियावै** – प्यास लगने पर मुँह सूखना; **कुँवर** – कोमल, नरम; **लक–लक ले तीपना** – अत्यधिक गर्म होना; **फिनगेसर** – फिंगेश्वर (एक गाँव का नाम); **पोंड़** – एक गाँव का नाम।

## अभ्यास

### पाठ से

**निर्देश :** हिंदी में दिए गए प्रश्नों के उत्तर हिंदी में तथा छत्तीसगढ़ी में दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपनी मातृभाषा में लिखिए।

1. ''टघल–टघल के सुरुज झरत हे'' इस पंक्ति का क्या आशय है?
2. कविता में तेज गर्मी के एहसास का भाव निहित है। इसे अपने शब्दों में लिखिए।
3. ग्रीष्मकाल में झाँझ के चलने से मनुष्य किस प्रकार प्रभावित होता है?
4. इन पंक्तियों का अर्थ लिखिए–

   ''चट–चट जरथे अँगना बैरी
   तावा बनगे छानी
   टप–टप टपके कारी पसीना
   नोहर होगे पानी।''
5. ग्रीष्मकाल में पानी का अभाव हो जाता है। कवि ने किन पंक्तियों में इस बात का उल्लेख किया है?
6. 'पलपला' और 'भोंभरा' शब्द के अर्थ में क्या अंतर है?
7. 'हर–हर के दिन आगे' ले आप का समझथव?

### पाठ से आगे

1. ग्रीष्मऋतु में तालाब/नदी के सूख जाने पर जल–जीवों पर क्या प्रभाव पड़ता है? लिखिए।
2. गर्मी के दिनों में पानी की समस्या पर अपने आस–पास के अनुभवों को लिखिए।
3. नगरीकरण के कारण लगातार वृक्ष काटे जा रहे हैं। वृक्षों के कटने से प्रकृति पर पड़ने वाले प्रभावों का उल्लेख कीजिए।

C6BT47

4. टप–टप, रिमझिम, चम–चम, बिजली, घुमड़ते बादल, काली–घटा, साथ–साथ, हवा, उफनते नदी–नाले, झूमते पेड़ आदि शब्दों का प्रयोग करते हुए वर्षा ऋतु पर एक कविता/लेख लिखिए।

## भाषा के बारे में

C6KP5U

1. निम्नलिखित छत्तीसगढ़ी मुहावरों के हिंदी अर्थ लिखिए।

   नोहर होना, फोड़ा परना, कान तिपना, आँखी मा आगी जलना, आगी फूँकना, पथरा फोरना, साँस उड़ना।

2. कविता में आए युग्म शब्दों को छाँटकर लिखिए जैसे–टप–टप, चम–चम। इसी तरह पाठ्यपुस्तक में हिंदी के भी युग्म शब्द आए हैं। उनकी सूची बनाइए।

## योग्यता विस्तार

1. प्रकृति वर्णन से संबंधित अन्य कवियों की छत्तीसगढ़ी कविताओं/गीतों का संकलन कीजिए।
2. पवन दीवान जी की अन्य हिंदी कविताओं का संकलन कीजिए।

C6UK7H

3. छत्तीसगढ़ से प्रकाशित होने वाले समाचार–पत्रों में छत्तीसगढ़ी की प्रकाशित कविताओं का संकलन करें और उन पर अपनी कक्षा में चर्चा कीजिए।
4. छत्तीसगढ़ के अन्य रचनाकारों की कविताएं संकलित कर पढ़िए।
5. जब किसी कविता की पंक्ति में अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन होता है तब वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है। ''टघल–टघल के सुरुज, झरत हे धरती ऊपर'' में अतिशयोक्ति अलंकार है।